स्वदेश ज्योति

नेपा लिमिटेड ने 60 वर्ष पुराने जल शोधन संयंत्र को किया चालू

स्वदेश ज्योति संवाददाता, बुरहानपुर

« नगर की जलापूर्ति हुई सामान्य, लोगों को मिली बड़ी राहत

'कागज की काशी' के नाम से विख्यात एशिया की प्राचीनतम शासकीय पेपर मिलों में शामिल केंद्रीय भारी उद्योग मंत्रालय के उपक्रम नेपा लिमिटेड ने एक बार फिर उद्योग के साथ सामाजिक दायित्व निभाने की अपनी परंपरा को साकार किया है। संस्थान ने लगभग 60 वर्ष पुराने नावथा जल शोधन संयंत्र को अपने ही संसाधनों और तकनीकी दक्षता के बल पर पुन: चालू कर न केवल नगर को संभावित पेयजल संकट से बचाया, बल्कि लाखों रुपये के अतिरिक्त खर्च को भी टाल दिया।

सकारात्मक नेतृत्व में तेजी से पूरे हो रहे लंबित कार्य: नवागत सीएमडी नरेश सिंह के नेतृत्व में नेपा लिमिटेड में कार्योन्मुख और सकारात्मक वातावरण निर्मित हुआ है। इसी का परिणाम है कि लंबे समय से लंबित तकनीकी कार्यों को अब प्राथमिकता के साथ पूरा किया जा रहा है। हाल ही में नवीनीकृत संयंत्रों का परीक्षण केंद्रीय भारी उद्योग मंत्रालय के प्रतिनिधिमंडल के समक्ष सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इसके साथ आयोजित वेंडर मीट के बाद देशभर के सप्लायर्स और वेंडर्स ने नेपा लिमिटेड में व्यावसायिक संभावनाओं के प्रति गहरी रुचि दिखाई है।

छह माह से बंद था जल शोधन संयंत्र: नगर की पेयजल व्यवस्था का प्रमुख आधार नावथा जल शोधन संयंत्र पिछले लगभग छह माह से बंद पड़ा था। ग्रीष्म ऋतु के आगमन को देखते हुए यह स्थिति गंभीर मानी जा रही थी। निर्माता कंपनी से संपर्क करने पर सर्वे, इंजीनियरिंग सहायता और आवश्यक पार्ट्स सहित मरम्मत के लिए लाखों रुपये खर्च का अनुमान सामने आया। इसके बाद नेपा लिमिटेड के यांत्रिकी विभाग ने संयंत्र को स्वयं चालू करने की जिम्मेदारी ली। मुख्य महाप्रबंधक (कार्य) राम अलागेसन के मार्गदर्शन में एक विशेष टीम गठित की गई। टीम ने संस्थान के उपलब्ध मानव संसाधन, यांत्रिकी कार्यशाला में तैयार किए गए पुर्जों तथा तकनीकी विशेषज्ञता के बल पर लगभग एक माह के सतत प्रयासों में संयंत्र को सफलतापूर्वक पुन: चालू कर दिया। संयंत्र चालू होते ही नगर की जलापूर्ति सामान्य हो गई और संभावित जल संकट टल गया, जिससे हजारों नागरिकों को बड़ी राहत मिली।

1966 में स्थापित है संयंत्र: जनसंपर्क अधिकारी संदीप ठाकरे ने बताया कि यह जल शोधन संयंत्र वर्ष 1966 में हिंदुस्तान कंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड, बॉम्बे द्वारा स्थापित किया गया था और नगर की पेयजल व्यवस्था की मुख्य कड़ी रहा है। नेपा लिमिटेड ने अपनी तकनीकी दक्षता और संसाधनों के माध्यम से इसे पुनर्जीवित कर एक सराहनीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इनका रहा विशेष योगदान: इस महत्वपूर्ण कार्य में यांत्रिकी विभागाध्यक्ष महेंद्र केशरी, प्रबंधक विजय चौधरी, उप प्रबंधक पिंटू कुमार गौतम, वरिष्ठ फिटर उमाकांत पाटिल, युवराज पाटिल, उमेश पाटिल, अमितेश थानेकर, अखिलेश गौतम, गणेश जाधव, विजय महाजन, मीनराज बैरवा, हितेश चौधरी, विकास सोनवने, देवीदास चौधरी, अभियंता पंकज पाटिल, विक्रांत बरने, विशाल चौधरी, मैकेनिकल वर्कशॉप प्रभारी किसन चौधरी सहित नावथा प्लांट के इंजीनियर लोकेन्द्र सेंगर, ऑपरेटर मुकेश मालवीय, राजेश ठाकुर, विद्युत विभाग के संजय पाटिल, योगेश चौधरी तथा सिविल विभाग के इंजीनियर मयंक राय और सुशील चौहान का विशेष सहयोग रहा।

नेपा लिमिटेड ने टाला पेयजल संकट, सकारात्मक माहौल में अपने संसाधनों से चालू किया 60 साल पुराना जल संयंत्र

दैनिक खबरों की रोशनी जिला ब्यूरो चीफ रविंद्र इंगले

बुरहानपुर/नेपानगर। कागज की काशी के नाम से विख्यात एशिया की प्राचीनतम शासकीय पेपर मिलों में शामिल केंद्रीय भारी उद्योग मंत्रालय के उपक्रम नेपा लिमिटेड ने एक बार फिर उद्योग के साथ सामाजिक दायित्व निभाने की अपनी परंपरा को सिद्ध किया है। लगभग 60 वर्ष पुराने जल शोधन संयंत्र को अपने ही संसाधनों से चालू कर संस्थान ने जहां नगर को संभावित पेयजल संकट से बचाया,वहीं लाखों रुपये के अतिरिक्त व्यय को भी टाल दिया। नवागत सीएमडी नरेश सिंह के नेतृत्व में संस्थान में सकारात्मक और कार्योन्मुख वातावरण निर्मित होने के बाद लंबित तकनीकी कार्यों को प्राथमिकता के साथ पूरा किया जा रहा है। हाल ही में नवीनीकृत संयंत्रों का परीक्षण केंद्रीय भारी उद्योग मंत्रालय के प्रतिनिधि मंडल के समक्ष सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इसके साथ आयोजित वेंडर मीट के बाद देशभर के वेंडर्स और सप्लायर्स ने नेपा लिमिटेड में व्यावसायिक संभावनाओं के प्रति गहरी रुचि दिखाई है। संस्थान में बने इसी सकारात्मक माहौल का परिणाम है कि लंबे समय से लंबित जटिल कार्य भी अब तेजी से पूरे हो रहे हैं। नगर की पेयजल व्यवस्था जिस नावथा जल शोधन संयंत्र पर निर्भर है,वह पिछले लगभग छह माह से बंद था। ग्रीष्म ऋतु को देखते हुए स्थिति गंभीर मानी जा रही थी। निर्माता कंपनी से संपर्क करने पर सर्वेक्षण,इंजीनियर तथा आवश्यक पार्ट्स सहित मरम्मत पर लाखों रुपये खर्च का अनुमान दिया गया। इसके बाद नेपा लिमिटेड के यांत्रिकी विभाग ने संयंत्र को अपने स्तर पर चालू करने की जिम्मेदारी ली। मुख्य महाप्रबंधक कार्य राम अलागेसन के मार्गदर्शन में टीम गठित की गई। टीम ने संस्थान के ही मानव संसाधन,यांत्रिकी कार्यशाला में तैयार किए गए। पार्ट्स तथा उपलब्ध उपकरणों की सहायता से लगभग एक माह के सतत प्रयासों में बंद पड़े संयंत्र को सफलतापूर्वक चालू कर दिया। इसके बाद नगर की जलापूर्ति सामान्य हो गई और संभावित संकट टल गया। जन संपर्क अधिकारी संदीप ठाकरे ने बताया कि वर्ष 1966 में हिंदुस्तान कंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड बॉम्बे द्वारा स्थापित यह जल शोधन संयंत्र नगर की पेयजल व्यवस्था की मुख्य कड़ी है। इसे नेपा लिमिटेड ने अपने ही मानव संसाधन, यांत्रिकी कार्यशाला में निर्मित पार्ट्स तथा तकनीकी दक्षता के बल पर दुरुस्त कर न केवल नगर को संभावित जल संकट से बचाया, बल्कि कंपनी को होने वाले भारी व्यय से भी सुरक्षित रखा। उन्होंने बताया कि सीएमडी नरेश सिंह के मार्गदर्शन में संस्थान में सकारात्मक कार्यसंस्कृति विकसित हुई है,जिसके परिणामस्वरूप लंबे समय से लंबित तकनीकी कार्यों को भी प्राथमिकता के साथ पूर्ण किया जा रहा है। इस कार्य में यांत्रिकी विभागाध्यक्ष महेंद्र केशरी,प्रबंधक यांत्रिकी विजय चौधरी,उप प्रबंधक पिंटू कुमार गौतम,वरिष्ठ फिटर उमाकांत पाटिल,वरिष्ठ फिटर युवराज पाटिल,उमेश पाटिल,अमितेश थानेकर,अखिलेश गौतम,गणेश जाधव,विजय महाजन,मीनराज बैरवा,हितेश चौधरी, विकास सोनवने,देवीदास चौधरी,अभियंता पंकज पाटिल,अभियंता विक्रांत बरने,विशाल चौधरी,मैकेनिकल वर्कशॉप प्रभारी किसन चौधरी के साथ नावथा ट्रीटमेंट प्लांट से इंजीनियर लोकेन्द्र सेंगर,ऑपरेटर मुकेश मालवीय,राजेश ठाकुर।

60 साल पुराना नावथा जल संयंत्र फिर शुरू किया नेपा में अब नहीं होगा जल संकट

● नेपानगर / राज न्यूज नेटवर्क

कागज की काशी के नाम से विख्यात एशिया की प्राचीनतम शासकीय पेपर मिलों में शामिल केंद्रीय भारी उद्योग मंत्रालय के उपक्रम नेपा लिमिटेड ने एक बार फिर उद्योग के साथ सामाजिक दायित्व निभाने की अपनी परंपरा को सिद्ध किया है। लगभग 60 वर्ष पुराने जल शोधन संयंत्र को अपने ही संसाधनों से चालू कर संस्थान ने जहां नगर को संभावित पेयजल संकट से बचाया, वहीं लाखों रुपये के अतिरिक्त व्यय को भी टाल दिया। सीएमडी नरेश सिंह के नेतृत्व में संस्थान में सकारात्मक और कार्योन्मुख वातावरण निर्मित होने के बाद लंबित तकनीकी कार्यों को प्राथमिकता के साथ पूरा किया जा रहा है। हाल ही में नवीनीकृत संयंत्रों का परीक्षण केंद्रीय भारी उद्योग मंत्रालय के प्रतिनिधि मंडल के समक्ष संपन्न हुआ। इसके साथ आयोजित वेंडर मीट के बाद देशभर के वेंडर्स और सप्लायर्स ने नेपा लिमिटेड में व्यावसायिक संभावनाओं के प्रति गहरी रुचि दिखाई है। संस्थान में बने इसी सकारात्मक माहौल का परिणाम है कि लंबे समय से लंबित जटिल कार्य भी अब तेजी से पूरे हो रहे हैं।

नगर की पेयजल व्यवस्था जिस नावथा जल शोधन संयंत्र पर निर्भर है, वह पिछले लगभग छह माह से बंद था। ग्रीष्म ऋतु को देखते हुए स्थिति गंभीर मानी जा रही थी। निर्माता कंपनी से संपर्क करने पर सर्वेक्षण, इंजीनियर तथा आवश्यक पार्ट्स सहित मरम्मत पर लाखों रुपये खर्च का अनुमान दिया गया। इसके बाद नेपा

लिमिटेड के यांत्रिकी विभाग ने संयंत्र को अपने स्तर पर चालू करने की जिम्मेदारी ली। मुख्य महाप्रबंधक कार्य राम अलागेसन के मार्गदर्शन में टीम गठित की गई। टीम ने संस्थान के ही मानव संसाधन, यांत्रिकी कार्यशाला में तैयार किए गए पार्ट्स तथा उपलब्ध उपकरणों की सहायता से लगभग एक माह के सतत प्रयासों में बंद पड़े संयंत्र को चालू कर दिया। इसके बाद नगर की जलापूर्ति सामान्य हो गई और संभावित संकट टल गया।

जन संपर्क अधिकारी संदीप ठाकरे ने बताया कि वर्ष 1966 में हिंदुस्तान कंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड बॉम्बे द्वारा स्थापित यह जल शोधन संयंत्र नगर की पेयजल व्यवस्था की मुख्य कड़ी है। इसे नेपा लिमिटेड ने अपने ही मानव संसाधन, यांत्रिकी कार्यशाला में निर्मित पार्ट्स तथा तकनीकी दक्षता के बल पर दुरुस्त कर न केवल नगर को संभावित जल संकट से बचाए बल्कि कंपनी को होने वाले भारी व्यय से भी सुरक्षित रखा।

दैनिक भास्कर
बुरहानपुर 20-03-2026

सुविधा • निजी कंपनी आती तो लगते 4 लाख रुपए, सीएमडी के प्रोत्साहन से कर्मचारियों ने किया कमाल

पिछले 6 माह से बंद पड़ा था नावथा का ट्रीटमेंट प्लांट नेपा मिल के कर्मचारियों ने एक महीने में ही किया चालू

भास्कर संवाददाता | नेपानगर

नेपा लिमिटेड के नावथा गांव में स्थित ट्रीटमेंट प्लांट से दशकों से नेपानगर शहर में जल वितरण किया जा रहा है। लेकिन यह प्लांट तकनीकी खामियों की वजह से करीब छह माह से बंद पड़ा था। निजी कंपनी से चर्चा की, तो उन्होंने निरीक्षण का खर्च करीब 20 हजार रुपए बताया। इसके अलावा रिपेयरिंग पर चार से साढ़े चार लाख रुपए खर्च होते।

ऐसे में नेपा लिमिटेड के नवागत सीएमडी नरेश सिंह ने कर्मचारियों से चर्चा की। उन्हें प्रोत्साहित किया कि अगर हम चाहें तो क्या नहीं कर सकते। कर्मचारियों ने करीब एक महीने की मेहनत के बाद खुद ही मिल में कलपुर्जे भी तैयार किए और अपने ही बनाए पार्ट्स को अपने अनुभव से ट्रीटमेंट प्लांट में लगाकर उसे दोबारा खड़ा कर दिया। इस ट्रीटमेंट प्लांट में ही फिल्टर होकर नगर में शुद्ध पेयजल वितरण होता है। नेपा लिमिटेड के कर्मचारियों ने अपनी क्षमता दिखाकर करीब 60 साल पुराने जल शोधन संयंत्र को अपने ही संसाधनों से चालू कर जहां नगर को संभावित पेयजल संकट से बचाया, वहीं लाखों रुपए के अतिरिक्त खर्च को भी टाल दिया। नगर की पेयजल व्यवस्था जिस नावथा जल शोधन संयंत्र पर निर्भर है, वह छह माह से बंद था।

गर्मी को देखते हुए स्थिति गंभीर मानी जा रही थी। निर्माता कंपनी से संपर्क करने पर सर्वेक्षण, इंजीनियर, आवश्यक पार्ट्स सहित मरम्मत पर 4 से 4.50 लाख रुपए खर्च का अनुमान बताया गया था। इसके बाद नेपा लिमिटेड के यांत्रिकी विभाग ने संयंत्र को अपने स्तर पर चालू करने की जिम्मेदारी ली।

ऐसे चली ट्रीटमेंट प्लांट चालू करने की पूरी प्रक्रिया

मुख्य महाप्रबंधक कार्य राम अलागेसन के मार्गदर्शन में टीम गठित की गई। टीम ने संस्थान के ही मानव संसाधन, यांत्रिकी कार्यशाला में तैयार किए पार्ट्स, उपलब्ध उपकरणों की सहायता से एक माह के सतत प्रयास से बंद पड़े संयंत्र को चालू कर दिया। इसके बाद नगर की जलापूर्ति सामान्य हो गई और संभावित संकट टल गया।

नेपा मिल के पीआरओ संदीप ठाकरे ने बताया 1966 में हिंदुस्तान कंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड बॉम्बे द्वारा स्थापित यह जल शोधन संयंत्र नगर की पेयजल व्यवस्था की मुख्य कड़ी है। सीएमडी सिंह के मार्गदर्शन में संस्थान में सकारात्मक कार्य संस्कृति विकसित हुई है। इसके परिणामस्वरूप लंबे समय से लंबित तकनीकी कार्यों को भी प्राथमिकता के साथ पूरा किया जा रहा है।

इस कार्य में यांत्रिकी विभागाध्यक्ष महेंद्र केशरी, प्रबंधक यांत्रिकी विजय चौधरी, उप प्रबंधक पिंटू कुमार गौतम, वरिष्ठ फिटर उमाकांत पाटिल, वरिष्ठ फिटर युवराज पाटिल, उमेश पाटिल, अमितेश थानेकर, अखिलेश गौतम, गणेश जाधव, विजय महाजन, मीनराज बैरवा, हितेश चौधरी, विकास सोनवने, मैकेनिकल वर्कशॉप प्रभारी किसन चौधरी के साथ नावथा ट्रीटमेंट प्लांट से इंजीनियर लोकेंद्र सेंगर, ऑपरेटर मुकेश मालवीय सहित अन्य कर्मचारियों ने सहयोग दिया।

नेपा लिमिटेड ने टाला पेयजल संकट

सकारात्मक माहौल में अपने संसाधनों से चालू किया 60 साल पुराना जल संयंत्र

नेपानगर। कागज की काशी के नाम से विख्यात एशिया की प्राचीनतम शासकीय पेपर मिलों में शामिल केंद्रीय भारी उद्योग मंत्रालय के उपक्रम नेपा लिमिटेड ने एक बार फिर उद्योग के साथ सामाजिक दायित्व निभाने की अपनी परंपरा को सिद्ध किया है।

लगभग 60 वर्ष पुराने जल शोधन संयंत्र को अपने ही संसाधनों से चालू कर संस्थान ने जहां नगर को संभावित पेयजल संकट से बचाया, वहीं लाखों रुपये के अतिरिक्त व्यय को भी टाल दिया।

नवागत सीएमडी नरेश सिंह के नेतृत्व में संस्थान में सकारात्मक और कार्योन्मुख वातावरण निर्मित होने के बाद लंबित तकनीकी कार्यों को प्राथमिकता के साथ पूरा किया जा रहा है। हाल ही में नवीनीकृत संयंत्रों का परीक्षण केंद्रीय भारी उद्योग मंत्रालय के प्रतिनिधि मंडल के समक्ष सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इसके साथ आयोजित वेंडर मीट के बाद देशभर के वेंडर्स और सप्लायर्स ने नेपा लिमिटेड में व्यावसायिक संभावनाओं के प्रति गहरी रुचि दिखाई है। संस्थान में बने इसी सकारात्मक माहौल का परिणाम है कि लंबे समय से लंबित जटिल कार्य भी अब तेजी से पूरे हो रहे हैं।

नगर की पेयजल व्यवस्था जिस नावथा जल शोधन संयंत्र पर निर्भर है, वह पिछले लगभग छह माह से बंद था। ग्रीष्म ऋतु को देखते हुए स्थिति गंभीर मानी

जा रही थी। निर्माता कंपनी से संपर्क करने पर सर्वेक्षण, इंजीनियर तथा आवश्यक पार्ट्स सहित मरम्मत पर लाखों रुपये खर्च का अनुमान दिया गया। इसके बाद नेपा लिमिटेड के यांत्रिकी विभाग ने संयंत्र को अपने स्तर पर चालू करने की जिम्मेदारी ली।

मुख्य महाप्रबंधक कार्य राम अलागेसन के मार्गदर्शन में टीम गठित की गई। टीम ने संस्थान के ही मानव संसाधन, यांत्रिकी कार्यशाला में तैयार किए गए पार्ट्स तथा उपलब्ध उपकरणों की सहायता से लगभग एक माह के सतत प्रयासों में बंद पड़े संयंत्र को सफलतापूर्वक चालू कर दिया। इसके बाद नगर की जलापूर्ति सामान्य हो गई और संभावित संकट टल गया।

जन संपर्क अधिकारी संदीप ठाकरे ने बताया कि वर्ष 1966 में हिंदुस्तान कंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड बॉम्बे द्वारा स्थापित यह जल शोधन संयंत्र नगर की पेयजल व्यवस्था की मुख्य कड़ी है। इसे नेपा लिमिटेड ने अपने ही मानव संसाधन, यांत्रिकी कार्यशाला में निर्मित पार्ट्स तथा तकनीकी दक्षता के बल पर दुरुस्त कर न केवल नगर को संभावित जल संकट से बचाया, बल्कि कंपनी को होने वाले भारी व्यय से भी सुरक्षित रखा। उन्होंने बताया कि सीएमडी नरेश सिंह के मार्गदर्शन में संस्थान में सकारात्मक कार्यसंस्कृति विकसित हुई है, जिसके परिणामस्वरूप लंबे समय से लंबित तकनीकी कार्यों को भी प्राथमिकता के साथ पूर्ण किया जा रहा है।

इस कार्य में यांत्रिकी विभागाध्यक्ष महेंद्र केशरी ,प्रबंधक यांत्रिकी विजय चौधरी, उप प्रबंधक पिंटू कुमार गौतम, वरिष्ठ फिटर उमाकांत पाटिल, वरिष्ठ फिटर युवराज पाटिल, उमेश पाटिल, अमितेश थानेकर, अखिलेश गौतम, गणेश जाधव, विजय महाजन, मीनराज बैरवा, हितेश चौधरी, विकास सोनवने, देवीदास चौधरी, अभियंता पंकज पाटिल, अभियंता विक्रांत बरने, विशाल चौधरी, मैकेनिकल वर्कशॉप प्रभारी किसन चौधरी के साथ नावथा ट्रीटमेंट प्लांट से इंजीनियर लोकेन्द्र सेंगर, ऑपरेटर मुकेश मालवीय, राजेश ठाकुर, विद्युत विभाग से इलेक्ट्रीशियन संजय पाटिल एवं योगेश चौधरी तथा सिविल विभाग से इंजीनियर मयंक राय और सुशील चौहान का विशेष सहयोग रहा।